International Journal of Geography, Geology and Environment

**P-ISSN:** 2706-7483
**E-ISSN:** 2706-7491
IJGGE 2020; 2(2): 18-22
Received: 16-05-2020
Accepted: 22-06-2020

**अरविन्द कुमार**
पी.एच.डी. शोधार्थी
किशोरी रमण (पी.जी.) कॉलेज, मथुर, उत्तर प्रदेश, भारत ।

**Corresponding Author:**
**अरविन्द कुमार**
पी.एच.डी. शोधार्थी
किशोरी रमण (पी.जी.) कॉलेज, मथुर, उत्तर प्रदेश, भारत ।

# भरथना तहसील में कृषि उत्पादन से अधिवासों के ऊपर पड़ता प्रभाव

## अरविन्द कुमार

### सारांश
आदि काल से कृषि की उपलब्धता ने जनसंख्या के बसाव एवं आकर्षक वन के रूप में अधिवासों के विकास में आकर्षक एवं निर्णायक भूमिका अदा की है। अधिवास स्थान के चयन में मानव ने सदैव कृषि को महत्व दिया है जहॉ एक ओर कृषि की सुगमता पूर्वक उपलब्धि अधिक बल में सहायक होती है वहीं दूसरी ओर कृषि की उपलब्धता की समस्या अधिवासों को विनास की ओर ले जाती है। मानव जाति का अस्तित्व मुख्यतः कृषि की उपलब्धता पर ही निर्भर करता है।
मानव अधिवास मानव की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। मानव अपने जीवन को भौतिक एवं प्राकृतिक समस्याओं से सुरक्षित रखने के लिये अधिवासों का प्रयोग करता है। रोटी कपड़ा के अतिरिक्त अधिवास मानव की सुरक्षा की दृष्टि से अति महत्वपूर्ण आवश्यकता है। राज्य एवं केन्द्र सरकार गरीबी से गुजरने वाले लोगों के लिये प्रधान मंत्री आवास योजना एवं अम्बेडकर ग्राम विकास योजना का संचालन किया है जो अधिवासों के निर्माण में अहम भूमिका प्रदान करती है।

### प्रस्तावना
मानव की 3 मूलभूत आवश्यकताऐं – भोजन, आवास एवं वस्त्र में से एक से सम्बन्धित होने के कारण मानव अधिवास सांस्कृतिक भू–दृश्य का प्रमुख घटक है। भूदृश्य में मानव वसाव क्षेत्रों की अधिवास क्षेत्र तथा मानव वसाव से रहित क्षेत्रों को निराधवासी क्षेत्र कहते हैं। अधिवासों का सामान्य वितरण मुख्यतः भौतिक एवं पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित रहता है। अध्ययन क्षेत्र में अधिवासों का वितरण सामान्य रूप से क्रमबद्ध है। विभिन्न सांस्कृतिक तथ्यों का प्रभाव अधिवासों के वितरण पर पड़ता है। प्राकृतिक एवं भौतिक तथ्यों के अन्तर्गत स्थान, स्थति, मिट्टी , नदियॉ और जल प्राप्ति आदि उल्लेखनीय है। अध्ययन क्षेत्र में यह देखा गया है कि अधिवासों के वितरण में जिन किसानों की कृषि अच्छी होती है उन किसानों के घर अच्छे बने हुए होते हैं। वहीं दूसरी ओर जिन किसानों की कृषि अच्छी नहीं होती है या छोटे किसान होते हैं उनके अधिवासों की स्थिति बहुत ही खराब है।

### अध्ययन का उद्देश्य
प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र भरथना तहसील में ग्रामीण अधिवासों के वितरण प्रतिरूप पर कृषि उत्पादन से पड़ता प्रभाव का अध्ययन करना है ताकि अध्ययन के आधार पर अध्ययन क्षेत्र में अधिवासों की स्थिति का सही से पता लगाना है।

### विधि तंत्र
प्रस्तुत अध्ययन में अनुमवात्मक अवलोकनात्मक एक विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग करते हुए ग्रामीण अधिवासों पर कृषि उत्पादकता से पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन से सम्बन्धित आंकड़ों को जनगणना पुस्तिका एवं जिला सांख्यकी पुस्तिका से प्राप्त किया गया है।

### अध्ययन क्षेत्र
अध्ययन क्षेत्र भरथना तहसील जनपद इटावा (उ0प्र0) के मध्यवर्ती भाग में 26033′ से 26678′ अक्षांश तथा 79000′ से 79022′ देशान्तर के मध्य लगभग 918 वर्म का क्षेत्र पर विस्तृत है। तहसील के स्तर में मैनपुरी एवं कन्नौज जनपद दो की सीमाऐं लगती हैं। पश्चिम पूर्व में इटावा तहसील व औरैया जनपद तक विस्तृत है। तहसील द0 भाग पर औरैया जनपद की चंकरनर तहसील की सीमा लगती है। अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 458620 है। जिसमें ग्रामीण जनसंख्या 396289 तथा नगरीय जनसंख्या 62331 है। इस तहसील में तीन विकास खण्ड तथा 26 न्याय पंचायतें हैं।

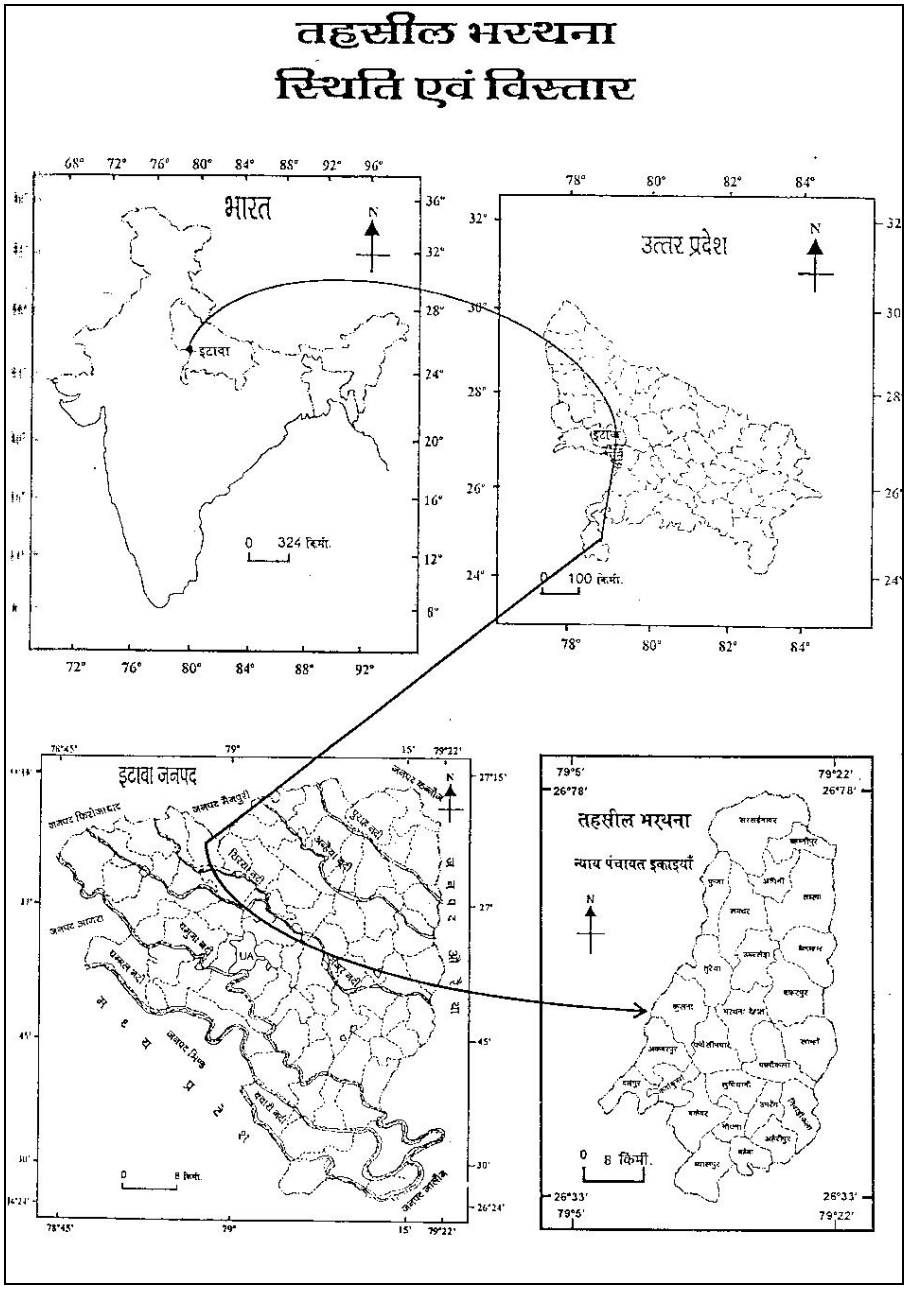


**व्याख्या**

मानव वस्तियॉ – मानवीय अधिवास भूदृश्य का एक प्रमुख तत्व है जिसका वितरण भूपृष्ठ के उस समूचे भाग पर पाया जाता है जो मानव की सामाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्रियाओं से प्रभावित है। इस प्रकार अधिवासों के माध्यम से किसी भी क्षेत्र के लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं, सांस्कृतिक परम्पराओं, पर्यावरण, जनसंख्या, भू–उपयोग तथा सांस्कृतिक संक्रमण के बारे में जाना जा सकता है। अधिवास के सूक्ष्म विश्लेषण से अधिवासियों में समृद्धि, जीवन स्तर, स्वास्थ्य, जीवन की गुणवत्ता, सामाजिक आधार आदि के सम्बन्ध में जानकारी मिल सकती है।

**वितरण**

अधिवासों के वितरण से अभिप्राय अधिवासों के विखराव से अर्थात् धरातल पर कहां अधिवास है और कहां नहीं है। इसी प्रकार वितरण प्रतिरूप का आशय अधिवासों के बीच आपेक्षिक दूरियों अथवा एक–दूसरे के संदर्भ में अन्तरण से लगाया जाता है। ग्रामीण अधिवासों का सामान्य वितरण मुख्यतः भौतिक पर्यावरणीय कारकों जैसे उच्चावचन, जलापूर्ति, अपवाह प्रणाली, मृदा उर्वरता तथा सामाजिक, आर्थिक कारकों जैसे सुरक्षा, भूमि उपयोग, भू–धारिता, फसल संगता, आवागमन संचार के साधनों, जनसंख्या घनत्व आदि से प्रभावित होता है। [16]

भौतिक एवं सामाजिक कारकों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में भरथना तहसील में अधिवासों के विभिन्न क्षेत्रों में वितरण का विश्लेषण प्रति 100 वर्ग किमी0 क्षेत्र में अधिवासों की संख्या के द्वारा न्याय पंचायत स्तर पर प्रस्तुत किया गया है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में अन्तर अधिवास दूरी का भी परोक्ष रूप से ज्ञात होता है, जिसका विश्लेषण 1 में दर्शाया गया है।

**तालिका 1:** भरथना तहसील में अधिवास वितरण प्रतिरूप

| अधिवास प्रति 100 वर्ग किमी | स्तर | न्याय पंचायतों की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 18 से कम | न्यून | 7 | 26.92 |
| 18 से 22 | मध्यम | 11 | 42.30 |
| 22 से अधिक | उच्च | 8 | 30.76 |
| योग | –– | 26 | 100.00 |

### न्यून अधिवास संख्या के क्षेत्र

भरथना तहसील में जैसा कि मानचित्र 2 में दिखाया गया है, न्यून अधिवास संख्या के क्षेत्र अपेक्षतः वृहद आकार के अधिवासों के क्षेत्र हैं। इनमें उमरसेड़ा, कन्धेसी पचार, बाहरपुर, अकबरपुर, साम्हों, कुसना तथा सरसईनावर न्यायपंचायतें आती हैं।

### मध्यम अधिवास संख्या के क्षेत्र

भरथना तहसील में मध्यम अधिवास 18 से 22 प्रति 100 वर्ग किमी0 में तहसील की 11 न्याय पंचायतें सम्मिलित होती है। इनमें पुन्जा, ताखा, बेलाहार, अधिनी, कर्वाबुजुर्ग, लुधियानी, निवाड़ीकला, अहेरीपुर, महेवा, दाईपुर तथा व्यासपुर न्याय पंचायत में श्रृंखलाबद्ध रूप से फैली हुई है।

विशेषतः खादर एवं बंजर भूमि के क्षेत्रों में भरथना तहसील में अपेक्षतः लघु अधिवास मिलते हैं, जो 100 वर्ग किमी क्षेत्र पर संख्या में 22 अधिवास से अधिक अंकित किये गये हैं। इनमें भरथना देहात, पालीकला, तुरैया, समथर, बृहमीपुर, बकेवर, नौधना तथा उरैग न्याय पंचायत समाहित है।

### तहसील भरथना में अधिवास वितरण प्रतिरूप

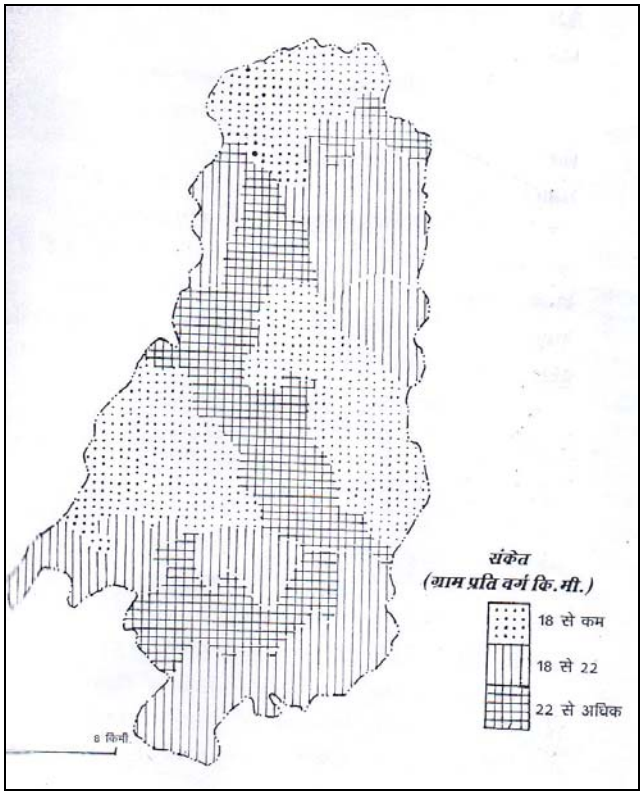


### आकार

बस्तियों के आकार की अभिव्यक्ति उनके द्वारा अधिगृहीत, क्षेत्र तथा उनमें निवास करने वाली जनसंख्या के संदर्भ में की जाती है। यह कदापि आवश्यक नहीं कि बड़े क्षेत्रीय आकार वाले अधिवास में रहने वाले लोगों की संख्या भी अधिक होगी अथवा उनका जनांककीय आकार भी बड़ा होगा। वास्तव में जनसंख्या का आकार मकानों की संख्या, आकार, सम्बद्धता स्तर आदि से निर्धारित होता है।

भरथना तहसील के विभिन्न क्षेत्रों में अधिवासों का आकार भिन्न प्रकार मिलता है। जिस पर स्थल आकार, मृदा, उर्वरता, सामाजिक स्थिति तथा ऐतिहासिक कारकों का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। प्रायः देखा गया है कि जिन क्षेत्रों में अधिवासों के उद्भव के लिये अनेक स्थल उपलब्ध रहे हैं यथा ऊसर एवं बंजर क्षेत्र तथा मृदा उर्वर क्षेत्र दूर–दूर रहे हैं अथवा अधिवास स्थल संकुचित मिलते हैं, वहां अधिवास आकार अपेक्षतः छोटा मिलता है जबकि विपरीत स्थिति में आकार में वृद्धि मिलती है।

भरथना तहसील में अधिवास आकार का विश्लेषण औसत जनसंख्या प्रति ग्राम के द्वारा न्याय पंचायत स्तर पर आंकलित किया गया है तथा इसे मानचित्र 1 के द्वारा प्रदर्शित किया गया है, जिसके विश्लेषण से निम्न प्रतिरूप उभरते हैं–

### 1. न्यून आकार की बस्तियाँ (1100 व्यक्ति प्रति ग्राम से कम)–

भरथना तहसील में अपेक्षतया न्यून आकार के अधिवास विशेषतः यमुना, सेंगर खादर एवं बीहड़ी क्षेत्र में क्रमशः कन्धेसी पचार, वाहरपुर, अकबरपुर, कुसना,

साम्हों, सरसईनावर, समथर, ब्रह्मीपुर, पुन्जा आदि न्याय पंचायतों में मिलते हैं।

**तालिका 2: भरथना तहसील में अधिवास आकार प्रतिरूप**

| प्रति व्यक्ति अधिवास | स्तर | न्याय पंचायतों की संख्या | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1100 से कम | न्यून | 9 | 34.61 |
| 1200 से 1500 | मध्यम | 10 | 38.46 |
| 1500 से अधिक | उच्च | 7 | 26.92 |
| योग | –– | 26 | 100.00 |

**2. मध्यम आकार की बस्तियाँ (1100 से 1500 व्यक्ति प्रति ग्राम):**
इस वर्ग में उन बस्तियों को सम्मिलित किया गया है जहां भौगोलिक परिस्थितियां विशेषतया मृदा, उर्वरता तथा अन्य भौगोलिक कारकों के दृष्टिगत विकट नहीं हैं। इसमें उमरखेड़ा, पालीकला, तुरैया, ताखा, नौधना, उरेंग, निबाड़ीकला, अहेरीपुर, दाईपुर तथा व्यासपुर न्याय पंचायतें सम्मिलित हैं।

**तहसील भरथना अधिवास आकार प्रतिरूप**

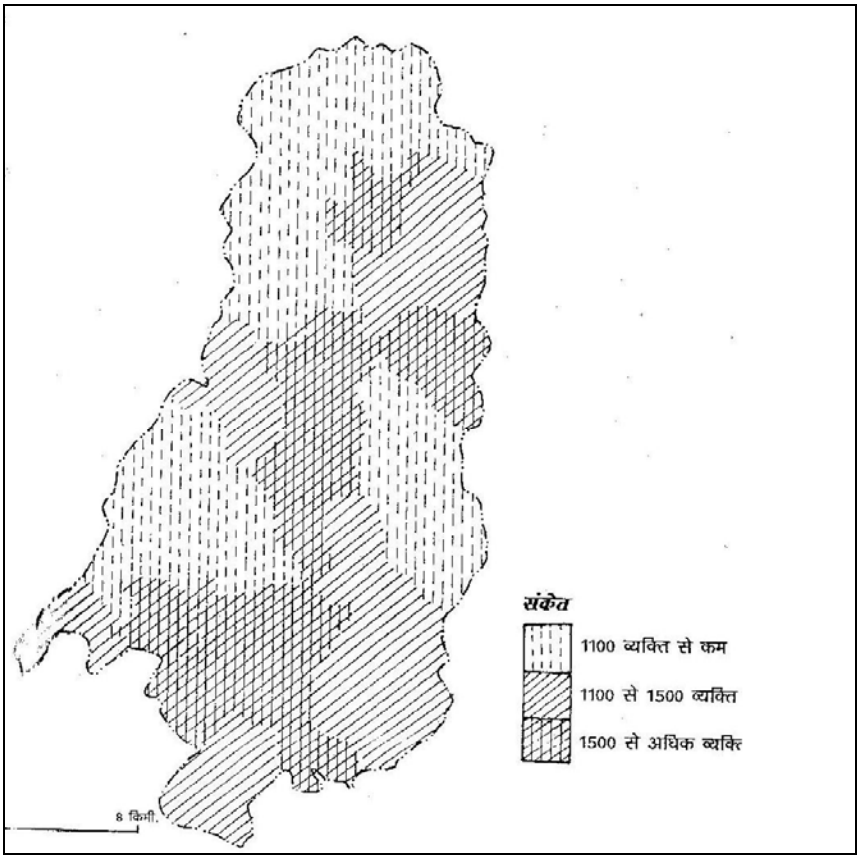


**3. बृहद आकार की बस्तियाँ (1500 से अधिक व्यक्ति प्रति ग्राम)**
अध्ययन क्षेत्र भरथना तहसील में तालिका 2 से स्पष्ट है कि तहसील की 7 न्याय पंचायतें इस वर्ग में सम्मिलित की गयी हैं जिनमें क्रमशः भरथना देहात, बेलाहार, अधिनी, कर्वावुजर्ग, अकेवर, लुधियानी तथा महेवा सम्मिलित है।

**प्रकार, प्रतिरूप एवं विन्यास**
किसी सुनिश्चित भूखण्ड जिसे मौजा कहते हैं, के अन्तर्गत ग्रामीण आवासों के विशिष्ट समूहन को प्रकार कहते हैं परन्तु इस परिभाषा को केवल स्थानीय महत्व है। प्रादेशिक स्तर पर प्रकार शब्द किसी क्षेत्र में अधिवासों के बीच सम्बन्धों का परिचायक है। दूसरे शब्दों में यह विशिष्ट मानकों द्वारा परिभाषित अपेक्षतया संभागी इकाइयों के एक समुच्चय का प्रतियपण करता है। संक्षेप में एक समुच्चय का प्रतिरूपण करता है। संक्षेप में ग्रामीण अधिवासों का प्रकार उनमें स्थिति भवनों की संख्या तथा उनके मध्य की पारस्परिक दूरी के आधार पर निश्चित किया जाता है। वास्तव में किसी क्षेत्र में आवासों के वितरण प्रतिरूप से ग्रामीण अधिवासों में ऐसी सुस्पष्ट विशेषताओं का आर्विभाव होता है जिनके कारण वे दूसरे क्षेत्र के अधिवासों से भिन्न लगते हैं तो उन्हें एक प्रकार के अन्तर्गत समाहित करते हैं।
बसाव की सघनता एवं प्रकीर्ण के आधार पर ग्रामीण अधिवासों को मुख्यतः निम्न 4 प्रकारों में विभाजित किया जाता है –
1. सघन ग्रामीण अधिवास
2. अर्द्ध सघन ग्रामीण अधिवास
3. पुरवा युक्त ग्रामीण अधिवास
4. प्रतिकीर्ण ग्रामीण अधिवास
भरथना तहसील में प्रायः दो प्रकार के अधिवास प्रतिरूप मिलते हैं, जिन्हें

निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है–

**1. सघन एवं वृहद् अधिवास–**

इस प्रकार के अधिवास विशेषतः तहसील के पश्चिमी भागों में सरसईनावर, समथर, भरथना देहात, दाईपुर, व्यासपुर न्याय पंचायतों में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त साम्हो, पुन्जा, ताखा, बेलाहार न्याय पंचायत के कुछ भागों में सघन एवं वृहद अधिवास मिलते हैं। इनमें अधिवासों के बीच की दूरी अधिक मिलती है तथा अधिवास सुगठित एवं सघन बसे हैं। छोटे अधिवास मुख्य अधिवास के निकट कहीं–कहीं कृषि भूमि की निकटता अथवा सामाजिक वसाव प्रक्रिया के अनुरूप मिल जाते हैं।

**2. नगला युक्त अर्द्ध सघन एवं लघु अधिवास**

इस प्रकार के अधिवास बंजर युक्त तथा असम तथा खादर भूमि के क्षेत्रों में उत्तर में वृहमीपुर अधिनी, पुन्जा, कुसना, अकबरपुर के क्षेत्रों में खादरी भूमि में बंजर प्रभावित क्षेत्रों में विशेषतः मिलते हैं।

**कृषि सम्बद्ध क्रियाकलापः**

विकासशील विश्व की दो प्रमुख समस्याओं में एक बेरोजगारी तथा दूसरी खाद्यान्न पूर्ति में आत्म निर्भरता का अभाव है जिनको कृषि क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन के बिना समाधान किया जाना सम्भव नहीं है।18 भारतीय कृषि परम्परागत एवं निर्वाहक स्तर से विमुक्त होने के लिये निरन्तर क्रान्तिकारी परिवर्तनों से गुजर रही है। जिसमें वर्तमान में जहां एक ओर पुरातन परम्पराओं का प्रभाव जो धीरे–धीरे कम हो रहा है जो परिलक्षित होता है, वहीं दूसरी ओर कृषि के बढ़ते आधुनिकीकरण एवं मशीनीकरण का प्रभाव भी स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। भरथना तहसील की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। जिनका कृषि से ही मुख्यतः जीविकोपार्जन होता है। कृषि जैसे वृहद् एवं व्यापक क्षेत्र को क्रमबद्ध अध्ययन के अन्तर्गत सम्पादित किया जा सकता है।

निष्कर्ष – विश्लेषण से प्राप्त तथ्यों द्वारा निष्कर्ष सामने आता है कि भरथना तहसील में अधिवास वितरण अध्ययन क्षेत्र में यह देखा गया है कि अधिवासों के वितरण में जिन किसानों की कृषि अच्छी होती है उन किसानों के घर अच्छे बने हुए होते हैं। वहीं दूसरी ओर जिन किसानों की कृषि अच्छी नहीं होती है या छोटे किसान होते हैं उनके अधिवासों की स्थिति बहुत ही खराब है। जिन किसानों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है उन किसानों को अच्छी खेती का ज्ञान कराकर उनकी आय बढ़ाकर उनको समृद्ध बनाना है।

**संदर्भ**


1. सोनी, एम.एल. मानव भूगोल राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकेडमी, जयपुर, पृष्ठ 103–104, 1995.
2. डेहरे, टी.आर. क्षेत्रीय नियोजन और समन्वित विकास, वसुन्धरा प्रकाश, गोरखपुर पृष्ठ 01, 1998.
3. वाडिया, डी.ए. 'ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया' लन्दन, पृष्ठ 368, 1957.
4. कृष्णनन. एम.एस. 'ज्योलॉजी ऑफ इण्डिया एण्ड वर्मा', मद्रास, पृष्ठ 533, 1960.
5. मामोरिया सी.वी. संसाधन भूगोल, साहित्य भवन एण्ड शर्मा वी.एल. आगरा पेज 56, 1989.
6. कुमार ए. निम्न गंगा छकारा दोआव (यू.पी.) मैन कृषि भूमि उपयोग मैन सिंचाई की भूमिका अनपब्लिस्ड थीसिस कानपुर यूनीसर्विटी, पेज 48, 1992.
7. चॉदना आर.सी., जनसंख्या भूगोल, नई दिल्ली, 1987, पृ. 46
8. डॉ. हीरालाल. जनसंख्या भूगोल, गोरखपुर, पृ. 33, 1993.
9. Clark JI. Population Oxford 1973, 29.
10. Prasad R. Population of India, , New Delhi, 1990, 55
11. Mishra RP. (ed) Population Geo. Concept, New Delhi.
12. दुबें के.के. और सिंह महेन्द्र बहादुर, जनसंख्या भूगोल, रावत पब्लिकेसनस् जयपुर एवं नई दिल्ली, 190–191, 1994.
13. Goel NV. Population Geography of a Backward Region of Rohilkhand, P.156, New Delhi, 1989.
14. दुबे के.के. एण्ड सिंह एम.वी. जनसंख्या भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स जयपुर एवं नई दिल्ली, पृ. 206, 1994.
15. श्रीवास्तव, वी.के. हेवीडेन्ट एण्ड इकोनॉकी ऑफ अपर मोन बेसिन, पृष्ठ 4, 1973.
16. Devis, Kingley. The origin and Growk of Vrbnisation in the World, In H.M. Mayor and C.F. Cohn (eds), Readings in Urban Geography, University of Chicago 1965, 59
17. Doxiadis CA. AnIntroduction to the Science of settlements, New York, 1968, 33
18. Local Level Planning and rural Development Alternative, Bankok, 1980, 25.
19. Singh RB. Geography of Rural Development the India Micro Level Experience, New Delhi, 1986, 135.
20. Demes WA. The Economic of Development in Small countries with special Reference to Caribeam, Menufactural, 1965.
21. Jerrett HR. Geography of Manufacturing Medom & Evans Poly Month, 1977.
22. औद्योगिक निर्देशिका जिा उद्योग केन्द्र, इटावा।